हिंदी (लोकवाणी)

हिंदी (लोकवाणी) : बोर्ड की कृतिपत्रिका (मार्च 2020)

(आदर्श उत्तरों सहित)

समय : 2 घंटे] **[कुल अंक : 40**

सूचनाएँ : *(1) सूचनाओं के अनुसार गद्य, पद्य तथा भाषा अध्ययन (व्याकरण) की कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।*

(2) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें।

(3) रचना विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।

(4) शुद्ध, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

विभाग 1 : गद्य (12 अंक)

प्र. 1. (अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **6 अंक**

धीरे-धीरे गाँववालों को खोए हुए आदमी के कई गुणों के बारे में पता चलने लगा। वह पशु-पक्षियों से बातें करता प्रतीत होता। लगता था जैसे वह पशु-पक्षियों की भाषा जानता हो। वह आँधी, तूफान, चक्रवात आने, ओले पड़ने या टिड्डियों के हमले के बारे में गाँववालों को पहले ही आगाह कर देता। उसकी भविष्यवाणी के कारण गाँववाले मुसीबतों से बच जाते। जब एक बार गाँव में सूखे की स्थिति उत्पन्न हो गई, तो खोए हुए आदमी ने आकाश की ओर देखकर न जाने किस भाषा में, किस देवता से प्रार्थना की। कुछ ही समय बाद गाँव में मूसलाधार बारिश होने लगी। सूखी-प्यासी मिट्टी तृप्त हो गई। बच्चे-बड़े सभी इस झमाझम बारिश में भीगने का भरपूर आनंद लेने लगे। उस दिन से खोया हुआ आदमी गाँव में सबका चहेता हो गया।

(1) आकृति पूर्ण कीजिए : **2**

खोए हुए आदमी के गुण –

↓

(i) --------------------

(ii) --------------------

(2) (i) गद्यांश में आए शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए। **1**

(1) ---------------- (2) ----------------

(ii) निम्नलिखित शब्दों के लिए गद्यांश में आए हुए पर्यायवाची शब्द लिखिए : **1**

(1) वर्षा = ---------------- (2) देहात = ----------------

(3) 'वाणी की मधुरता' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। **2**

प्र. 1. (आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 6 अंक

'मैंने देखा, हरसिंगार नये पत्तों और टहनियों से लद गया है। जाड़े में खंखड़-सा हो जाता है और कभी-कभी डर लगता है कि यह सूख तो नहीं रहा है, लेकिन वसंत आते ही इसके भीतर सोई ऊर्जा जागने लगती है, प्राणरस छलकने लगता है और क्रमशः नई टहनियों तथा नये पत्तों के सौंदर्य से लद जाता है। मैं उसे देख रहा हूँ और लगता है, अब इसमें फूल आया, तब इसमें फूल आया। हाँ, यह हरसिंगार बहुत मस्त है। आषाढ़ में ही हलकी-हलकी हँसी उसमें फूटने लगती है, फिर शरद में तो कहना ही क्या! तारों भरा आसमान बन जाता है। रात भर जगमग-जगमग करता रहता है और सुबह को अनंत फूलों के रूप में धरती पर बिछ जाता है। रात भर उसकी महक घर में टहलती रहती है।

(1) कृति पूर्ण कीजिए : 2

हरसिंगार में होने वाले बदलाव –

→ वसंत ऋतु में ----------

→ वर्षा ऋतु में -----------

(2) (i) वचन परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए : 1

ऊर्जा जागने लगती है।

(ii) निम्नलिखित शब्दों के लिए गद्यांश में आए विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए : 1

(1) पुरानी × ----------------

(2) दिन × ----------------

(3) 'प्रकृति की रक्षा करना हमारा कर्तव्य' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। 2

विभाग 2 : पद्‍य (8 अंक)

प्र. 2. (अ) निम्नलिखित पठित पद्‍यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 4 अंक

कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढ़ै बन माहिं।
ऐसे घट में पीव है, दुनिया जानै नाहिं।।
जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहिरे पानी पैठ।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ।।
जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोउ तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, बाको है तिरसूल।।

(1) कृति पूर्ण कीजिए : 2

(i) लिखिए
- फूल बोने का परिणाम --------------
- काँटे बोने का परिणाम --------------

(ii) लिखिए
- किनारे पर यह बैठा रहता है ----------
- वन में कस्तूरी यह ढूँढ़ता है -----------

(2) पद्‍यांश की पहली दो पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए। 2

प्र. 2. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **4 अंक**

यहाँ हर शख्स हर पल हादिसा होने से डरता है,
खिलौना है जो मिट्टी का, फना होने से डरता है।
मेरे दिल के किसी कोने में इक मासूम-सा बच्चा,
बड़ों की देखकर दुनिया बड़ा होने से डरता है।
न बस में जिंदगी इसके, न काबू मौत पर इसका,
मगर इन्सान फिर भी कब खुदा होने से डरता है।
अजब ये जिंदगी की कैद है, दुनिया का हर इन्साँ,
रिहाई माँगता है और रिहा होने से डरता है।

(1) संजाल पूर्ण कीजिए : **2**

डरता है –

- खिलौना → ______
- मासूम बच्चा → ______
- रिहाई माँगने वाला इन्सान → ______
- शख्स → ______

(2) पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए। **2**

विभाग 3 : भाषा अध्ययन (व्याकरण) (8 अंक)

प्र. 3. निम्नलिखित सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **8 अंक**

(1) मानक वर्तनी के अनुसार सही शब्द छाँटकर लिखिए : **1**

(i) विश्वास, विशवास, विसवास, विशवाश – ---------------

(ii) चिन्ह, चीन्ह, चिह्न, चिह्‌न – ---------------

(2) निम्नलिखित में से किसी एक अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए : **1**

(i) के लिए

(ii) शाबाश!

(3) कृति पूर्ण कीजिए : **1**

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि भेद
---------	सत् + जन	---------

अथवा

महात्मा	---------	---------

(4) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए : **1**

(यादों में जाग उठना, नाक-भौं सिकोड़ना)

बचपन के गीत सुनकर मेरी <u>यादें ताजा हो गईं</u>।

अथवा

• **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर उचित वाक्य में प्रयोग कीजिए :**

मन मारना।

(5) काल भेद पहचानिए तथा काल परिवर्तन कीजिए : **2**

(i) निम्नलिखित वाक्य का काल भेद पहचानिए :

कल क्या खाया था?

(ii) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :

(1) पानी अब निर्मल नहीं रहा है। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(2) वह तुम्हें हमेशा बुरा-भला कहती है। *(पूर्ण वर्तमानकाल)*

(6) वाक्य भेद तथा वाक्य परिवर्तन : **2**

(i) निम्नलिखित वाक्य का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

चंपा के पौधे लगा लिए हैं।

(ii) निम्नलिखित वाक्य का अर्थ के आधार पर दी गई सूचनानुसार परिवर्तन कीजिए :

इस बात के लिए ये गाँववाले ही जिम्मेदार हैं। *(प्रश्नार्थक वाक्य)*

विभाग 4 : रचना विभाग (उपयोजित लेखन) (12 अंक)

सूचना – आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है।

प्र. 4. सूचनाओं के अनुसार लिखिए : **12 अंक**

(अ) (1) पत्र-लेखन : **4**

• **निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :**

शरद/शारदा इंगले, तुकाई सदन, तिलक नगर, चालीसगाँव से व्यवस्थापक, मनुश्री पुस्तक भंडार, महात्मा नगर, जलगाँव को हिंदी की निम्नलिखित पुस्तकें मँगवाने हेतु पत्र लिखता/लिखती है।

अ.क्र.	पुस्तकों के नाम	लेखक	प्रतियाँ
1.	गोदान	प्रेमचंद	4
2.	पानी के प्राचीर	रामदरश मिश्र	6
3.	पिंजर	अमृता प्रीतम	3

अथवा

प्रकाश/प्रगति सालुंखे, वर्तक नगर, जालना से अपने मित्र/सहेली गौरव/गौरवी चव्हाण, आह्लाद नगर, बीड को जन्मदिन की बधाई देने हेतु पत्र लिखता/लिखती है।

(2) कहानी-लेखन : **4**

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 60 से 70 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए :

एक आलसी किसान – अमीर होने का सपना – साधु के पास जाना – गुप्त धन की जानकारी पूछना – साधु का कहना – गुप्त धन खेत में – किसान द्वारा रोज खेत को खोदना – धन न मिलना – किसान का निराश होना – बरसात के दिनों में बीज डालना – अच्छी फसल – किसान के पास अच्छा धन – शीर्षक – सीख।

अथवा

- **गद्य आकलन – प्रश्न निर्मिति :**
- **निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर गद्यांश में एक-एक वाक्य में हों :**

तविषा अपराध-बोध से भरी हुई थी। मांडवी दी से उसने अपना संशय बाँटा। चावल की टंकी में घुन हो रहे थे। उस सुबह उसने मारने के लिए डाबर की पारे की गोलियों की शीशी खोली थी, चावलों में डालने के लिए। शीशी का ढक्कन मरोड़कर जैसे ही उसने ढक्कन खोलना चाहा, कुछ गोलियाँ छिटककर दूर जा गिरीं। गोलियाँ बटोर उसने टंकी में डाल दी थीं। फिर भी उसे शक है कि एकाध गोली ओने-कोने में छूट गई होगी।

प्र. 4. (आ) निबंध-लेखन :

- **निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 60 से 70 शब्दों में निबंध लिखिए :** **4**

(1) मैं पेड़ बोल रहा हूँ...

(2) अनुशासन का महत्त्व।

★ ★ ★

बोर्ड की कृतिपत्रिका के उत्तर (मार्च 2020)

प्र. 1. (अ)

(1) **खोए हुए आदमी के गुण –**

(i) वह पशु-पक्षियों से बातें करता प्रतीत होता था, जैसे वह उनकी भाषा जानता हो।

(ii) वह आँधी, तूफान, चक्रवात आने, ओले पड़ने या टिड्डियों के हमले के बारे में गाँववालों को पहले ही आगाह कर देता था।

(2) **(i)** (1) सूखी - प्यासी

(2) बच्चे - बड़े।

(ii) (1) वर्षा = बारिश

(2) देहात = गाँव।

(3) वाणी मनुष्य को ईश्वर की एक अनमोल देन है। इसलिए मनुष्य को इस ईश्वरीय देन का सदुपयोग करना चाहिए। हमारे व्यवहार में मधुर वाणी का विशेष महत्त्व है। अपने मधुर वचनों से हम किसी के निराश हृदय में आशा का संचार कर सकते हैं। मनुष्य के मीठे बोल किसी के गम को खुशी में बदल सकते हैं। मधुर वाणी दुश्मन को भी दोस्त बना लेती है। मधुर वाणी व्यक्ति का विशेष गुण है। मधुर भाषी व्यक्ति को आदर मिलता है। मधुर वाणी से बिगड़े काम भी बन जाते हैं। मधुर वाणी व्यवसायी को व्यापार-धंधे में लाभ पहुँचाती है, तो नौकरी-पेशा व्यक्ति को अपने कार्य-क्षेत्र में सम्मान दिलाती है। वाणी की मधुरता से परिवार में मेलजोल का माहौल बना रहता है। वाणी की मधुरता से आपसी लड़ाई-झगड़े भी मिट जाते हैं। लेकिन मधुर भाषी व्यक्ति को अपनी भाषा का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। उसे मधुर वचन बोलकर किसी को ठगने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

प्र. 1. (आ)

(1) **हरसिंगार में होने वाले बदलाव –**

- वसंत ऋतु में – हरसिंगार नई टहनियों तथा नए पत्तों के सौंदर्य से लद जाता है।
- वर्षा ऋतु में – हरसिंगार में हल्की-हल्की हँसी (कली) फूटने लगती है।

(2) **(i)** <u>ऊर्जाएँ</u> जागने लगती <u>हैं</u>।

(ii) (1) पुरानी × नई।

(2) दिन × रात।

(3) प्रकृति और मनुष्य का जीवन-मरण का संबंध है। थल, जल और आकाश में जो कुछ भी है, वह सब प्रकृति का रूप है। यदि प्रकृति हरी-भरी, निर्मल और शुद्ध होगी, तो मनुष्य का जीवन भी स्वस्थ होगा। इसलिए प्रकृति की हर प्रकार से रक्षा करना मनुष्य का कर्तव्य और उसकी जिम्मेदारी है। स्वस्थ, शुद्ध प्रकृति के लिए हमें धरती को हरी-भरी रखना होगा। जंगल और वृक्षों को बचाना होगा। जलाशयों, नदियों, भूजल और समुद्र को प्रदूषित होने से बचाना होगा। वायुमंडल को शुद्ध रखना होगा। पर आजकल जंगलों और पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। कारखानों का गंदा पानी और शहरों के गंदे नाले, नदियों और समुद्र में प्रवाहित किए जा रहे हैं। कारखानों की चिमनियों का धुआँ आकाश में छोड़ा जा रहा है। इससे वर्षा की मात्रा में कमी आई है। पेयजल प्रदूषित हो रहा है। लोगों को प्रदूषित हवा में साँस लेनी पड़ रही है। इससे तरह-तरह की बीमारियाँ फैल रही हैं। इनसे मनुष्य जाति को बचाना जरूरी है। यह कार्य प्रकृति की रक्षा करके ही किया जा सकता है। इसलिए प्रकृति की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

प्र. 2. (अ)

(1)

(i) → – बदले में फूल (भलाई) मिलेंगे।
→ – बदले में त्रिशूल (बुराई) मिलेंगे।

(ii) → – डूबने से डरने वाला।
→ – मृग।

(2) संत कबीर कहते हैं कि मनुष्य की हालत कस्तूरी मृग की तरह है। कस्तूरी हिरन की नाभि में होती है, लेकिन हिरन को इसकी जानकारी नहीं होती। वह उसकी सुगंध से अभिभूत होकर उसे प्राप्त करने के लिए जंगल-जंगल ढूँढ़ता फिरता है। परंतु अज्ञानवश उसे यह जानकारी नहीं होती कि कस्तूरी तो उसके भीतर विद्‌यमान है। इसी प्रकार ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के शरीर में विद्‌यमान है, लेकिन मनुष्य अज्ञानवश उसे यहाँ-वहाँ (बाहर) ढूँढ़ता फिरता है। वह अपने अंदर विद्‌यमान ईश्वर को नहीं पहचान पाता।

प्र. 2. (आ)

(1) **डरता है –**

- खिलौना – फना होने से
- मासूम बच्चा – बड़ा होने से
- रिहाई माँगने वाला इन्सान – रिहा होने से
- शख्स – हादिसा होने से

(2) कवि कहते हैं कि मनुष्य बड़ा ही अनोखा जीव है। इस संसार में उसका मौत पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण नहीं है। मौत कब उसे अपना ग्रास बना लेगी, वह नहीं जानता। दूसरी ओर मानव का अपने जीवन पर भी कोई बस नहीं है। वह तो परिस्थितियों के हाथों में केवल एक खिलौने के समान है। फिर भी मनुष्य खुद को भगवान के समान मानने लगा है।

मनुष्य परिस्थितियों के हाथों में, जिंदगी के हाथों में एक कठपुतली के समान है। अनेक अवसरों पर परेशान होकर वह इन सबसे मुक्ति की आकांक्षा करता है। परंतु वास्तव में देखा जाए, तो दुनिया के आकर्षण से वह कभी भी मुक्त नहीं हो पाता। सुख-समृद्धि के उपभोग की उसकी लालसा कभी पूर्ण नहीं होती।

प्र. 3.

(1) (i) विश्वास

(ii) चिह्न।

(2) (i) हमें अपने देश के लिए काम करना चाहिए।

(ii) शाबाश! इसी प्रकार आगे बढ़ते रहो।

(3)

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि भेद
सज्जन	सत् + जन	व्यंजन संधि

अथवा

महात्मा	महा + आत्मा	स्वर संधि

(4) • बचपन के गीत मेरी यादों में जाग उठे। ***अथवा***

मुहावरा – मन मारना–**अर्थ :** इच्छा को दबाना।

वाक्य : लेखक मन मारकर रेल की यात्रा कर रहे थे।

(5) (i) पूर्ण भूतकाल।

(ii) (1) पानी अब निर्मल नहीं रहेगा।

(2) उसने तुम्हें हमेशा बुरा-भला कहा है।

(6) (i) सरल वाक्य।

(ii) इस बात के लिए क्या ये गाँववाले ही जिम्मेदार हैं?

प्र. 4. (अ) तथा (आ)

उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखे।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।

★ ★ ★

हिंदी (लोकवाणी) : बोर्ड की कृतिपत्रिका (नवंबर 2020)

(आदर्श उत्तरों सहित)

समय : 2 घंटे] **[कुल अंक : 40**

सूचनाएँ : *(1) सूचनाओं के अनुसार गद्‌य, पद्‌य तथा भाषा अध्ययन (व्याकरण) की कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।*

(2) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें।

(3) रचना विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।

(4) शुद्‌ध, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

विभाग 1 : गद्‌य (12 अंक)

प्र. 1. (अ) निम्नलिखित पठित गद्‌यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **6 अंक**

कई वर्षों की बात है। एक पुराना गाँव था। एक आदमी न जाने कहाँ से भटकता हुआ दूर-दराज के उस गाँव में आ पहुँचा था। गाँव के कुत्तों ने जब चीथड़ों में लिपटे उस अजीब आदमी को देखा तो उन्हें वह कोई पागल लगा। वे उस पर बेतहाशा भौंकने लगे। गाँव के बच्चे खेल रहे थे। कुत्तों की देखा-देखी गाँव के बच्चे भी पूरी दोपहर उसे छेड़ते और तंग करते रहे। आश्चर्य की बात यह थी कि वह आदमी उन बच्चों को कुछ बोल नहीं रहा था। संयोग से किसी भले आदमी ने गाँव के बच्चों को उस पर पत्थर फेंकते हुए देख लिया। जब वह भला आदमी उस आदमी के करीब गया तो उसके चेहरे पर मौजूद खोएपन के भाव के बावजूद उसे उसमें गरिमा के चिह्न दिखे। 'यह आदमी पागल नहीं हो सकता' – उसने सोचा। गाँव के उस आगंतुक भले व्यक्ति ने उस आदमी से उसका नाम, पता पूछा, पर वह कोई उत्तर नहीं दे सका।

(1) कृति पूर्ण कीजिए : **2**

अजीब आदमी को देखकर प्रतिक्रियाएँ –

- कुत्तों की – [ ]
- गाँव के बच्चों की – [ ]

(2) गद्‌यांश से ढूँढ़कर लिखिए :

(i) समानार्थी शब्द : **1**

(1) गौरव –

(2) अचरज –

(ii) शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए : **1**

(1) पहले से तिथि, समय आदि की सूचना दिए बिना अचानक आने वाला –

(2) बहुत घबराकर और बिना सोचे समझे –

(3) 'मनुष्य की पहचान गुणों से होती है' विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। **2**

प्र. 1. (आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **6 अंक**

> एक बार एक बहुरूपिये ने साधु का रूप बनाया – सिर पर जटाएँ, नंगे शरीर पर भस्म, माथे पर त्रिपुंड, कमर में लँगोटी। उसके रूप में कहीं कोई कसर नही थी और वह संसारत्यागी साधु ही लगता था। उसने नगर से बाहर बड़े-से पेड़ के नीचे अपनी झोंपड़ी तैयार की, बगीचा लगाया और बैठकर तपस्या करने लगा। धीरे-धीरे सारे नगर में यह समाचार फैलने लगा कि बाहर एक बहुत पहुँचे हुए महात्मा ने आकर डेरा लगाया है। लोग उसके दर्शनों को आने लगे और धीरे-धीरे चारों तरफ साधु का यश फैल गया। सारे दिन उसके यहाँ भीड़ लगी रहती थी। लोग कहते थे कि महात्मा जी के उपदेशों में जादू है और उनके आशीर्वाद से संसार के बड़े-से-बड़े कष्ट दूर हो जाते हैं। अपनी इस कीर्ति से साधु को कभी-कभी बड़ा आश्चर्य होता और मन-ही-मन वह अपनी सफलता पर मुसकराया करता।

(1) वाक्य पूर्ण कीजिए : **2**

(i) सारे नगर में समाचार फैलने लगा कि – ----------------

(ii) साधु के बारे में लोग कहते थे कि – -------------------

(2) गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए :

(i) शब्द-युग्म : **1**

(1) ---------------- (2) ----------------

(ii) विलोम शब्द : **1**

(1) असफलता × ---------------- (2) अपकीर्ति × ----------------

(3) समाप्त होते जा रहे बहुरूपियों के पेशे के बारे में 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए। **2**

विभाग 2 : पद्य (8 अंक)

प्र. 2. (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **4 अंक**

> सोंधी-सोंधी-सी सुगंध, माटी से बोली,
> बादल बरस गया, धरती ने आँखें खोलीं।
> चारों ओर हुई हरियाली कहे मयूरा,
> सदियों का जो सपना है हो जाए पूरा।
> एक यहाँ पर नहीं अकेला, होगी टोली,
> सोंधी-सोंधी-सी सुगंध, माटी से बोली।।
> बाग-बगीचे, ताल-तलैया सब मुस्काएँ,
> झूम-झूमकर मस्ती में तरु गीत सुनाएँ।

(1) कृति पूर्ण कीजिए : **2**

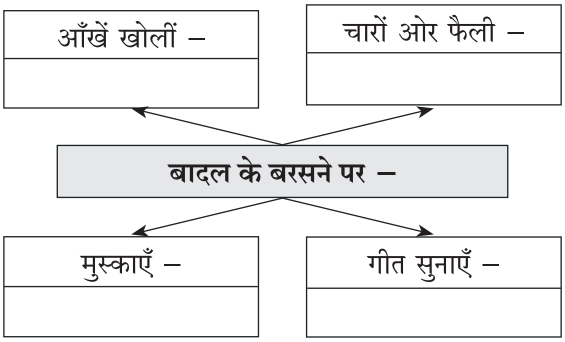

(2) उपर्युक्त पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का 25 से 30 शब्दों में सरल अर्थ लिखिए। **2**

प्र. 2. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **4 अंक**

> मानुष हौं तो वही 'रसखान', बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वारन।
> जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।
> पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन।
> जो खग हौं तो बसेरौं करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।।
> धूरि भरे अति सोहत स्याम जू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
> खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैंजनि बाजति, पीरी कछोटी।।

(1) तालिका पूर्ण कीजिए : **2**

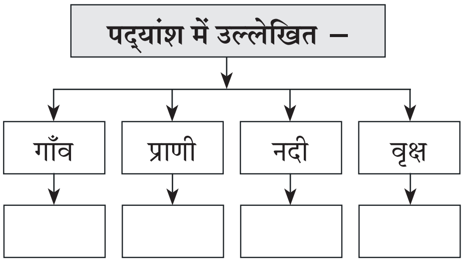

(2) उपर्युक्त पद्यांश की क्रमशः किन्हीं दो पंक्तियों का 25 से 30 शब्दों में सरल अर्थ लिखिए। **2**

विभाग 3 : भाषा अध्ययन (व्याकरण) (8 अंक)

प्र. 3. निम्नलिखित सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **8 अंक**

(1) मानक वर्तनी के अनुसार सही शब्द छाँटकर लिखिए : **1**

(i) मसतक/मस्थक/मस्तक/मस्तख

(ii) खुबसुरत/खूबसुरत/खूबसूरत/खुबसूरत

(2) निम्नलिखित अव्ययों में से किसी एक अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए : **1**

(i) धीरे-धीरे

(ii) इसलिए।

(3) कृति पूर्ण कीजिए : 1

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि भेद
---------	सत् + जन	---------

अथवा

दुर्लभ	---------	---------

(4) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए : 1

(यादों में जाग उठना, अंक में भर लेना)

बहुत सालों बाद मिले अपने बेटे को माँ ने गले लगाया।

अथवा

- **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर उचित वाक्य में प्रयोग कीजिए :**

मुहावरा – चौपट हो जाना।

अर्थ –

वाक्य –

(5) काल भेद पहचानिए तथा काल परिवर्तन कीजिए : 2

(i) निम्नलिखित वाक्य का काल भेद पहचानकर लिखिए :
कहाँ तक चल रहे हैं?

(ii) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :

(1) मुझे अभिवादन का ध्यान आया। *(सामान्य भविष्यकाल)*

(2) मैंने सबकी बात सुनी है। *(पूर्ण भूतकाल)*

(6) वाक्य भेद तथा वाक्य परिवर्तन : 2

(i) निम्नलिखित वाक्य का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

स्टेशन मास्टर ने सिग्नल नहीं दिया और गाड़ी आउटर पर खड़ी रही।

(ii) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का अर्थ के आधार पर दी गई सूचनानुसार परिवर्तन कीजिए :

(1) ओह! दिव्या मैं ठीक हूँ। *(विधानार्थक वाक्य)*

(2) अधिक वर्षा के लिए हम जिम्मेदार हैं। *(प्रश्नार्थक वाक्य)*

विभाग 4 : रचना विभाग (उपयोजित लेखन) (12 अंक)

सूचना – आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है।

प्र. 4. सूचनाओं के अनुसार लिखिए : 12 अंक

(अ) (1) पत्र-लेखन : 4

- **निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :**

अनिल/अनिता पाटील, गणेश नगर, सोलापुर से अपने मित्र/सहेली समीर/समिरा जमादार, बुधवार पेठ, सांगली को छुट्टियों में अपने घर आमंत्रित करने हेतु पत्र लिखता/लिखती है।

अथवा

राहुल/रविना जाधव, 12, शिवाजी नगर, पुणे से सचिन स्पोर्ट्स, 30, चंदन नगर, नासिक को खेल सामग्री की माँग करने हेतु पत्र लिखता/लिखती है।

(2) कहानी-लेखन : **4**

निम्नलिखित मुद्‌दों के आधार पर 60 से 70 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए :

घना-सा जंगल – एक कस्तूरी मृग – कस्तूरी की खुशबू चारों ओर फैलना – कस्तूरी मृग का हैरान होना – सुगंध की खोज करना – सुगंध महसूस करना, पर दिखाई न देना – अंत में पता चलना।

अथवा

- **गद्‌य आकलन – प्रश्न निर्मिति :**
- **निम्नलिखित गद्‌यांश पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर गद्‌यांश में एक-एक वाक्य में हों :**

राही मासूम रजा का जन्म 1 सितंबर 1927 को पूर्वी उत्तर प्रदेश गाजीपुर के गंगौली गाँव में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। अलीगढ़ युनिवर्सिटी से उर्दू साहित्य में पीएच्‌डी. करने के बाद उन्होंने कुछ साल तक वहीं अध्यापन कार्य किया। फिर वे मुंबई चले गए, जहाँ सैकड़ों फिल्मों की पटकथा, संवाद और गीत लिखे। प्रसिद्‌ध धारावाहिक 'महाभारत' की पटकथा और संवाद लेखन ने उन्हें इस क्षेत्र में सर्वाधिक ख्याति दिलाई। राही मासूम रजा एक ऐसे कवि-कथाकार थे, जिनके लिए भारतीयता आदमीयता का पर्याय रही। इनके पूरे लेखन में आम हिंदुस्तानी की पीड़ा, दुख-दर्द, उसकी संघर्ष क्षमता की अभिव्यक्ति है।

प्र. 4. (आ) निबंध-लेखन :

- **निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 60 से 70 शब्दों में निबंध लिखिए :** **4**

(1) बाढ़पीड़ित की आत्मकथा

(2) यदि मैं अंतरिक्ष यात्री होता...

★ ★ ★

बोर्ड की कृतिपत्रिका के उत्तर (नवंबर 2020)

प्र. 1. (अ)

(1) अजीब आदमी को देखकर प्रतिक्रियाएँ –

- कुत्तों की – कुत्ते बेतहाशा भौंकने लगे।
- गाँव के बच्चों की – बच्चे पूरी दोपहर उसे छेड़ते और तंग करते रहे। उस पर पत्थर फेंकने लगे।

(2) **(i)** (1) गौरव – गरिमा

(2) अचरज – आश्चर्य।

(ii) (1) पहले से तिथि, समय आदि की सूचना दिए बिना अचानक आने वाला – आगंतुक।

(2) बहुत घबराकर और बिना सोचे समझे – बेतहाशा।

(3) जन्म से सभी मनुष्य समान होते हैं। सब का एक जैसा आकार-प्रकार, मस्तिष्क और रुधिर होता है। पर बड़े होने पर धीरे-धीरे लोगों में धर्म, जाति और अमीरी, गरीबी के आधार पर भेद-भाव शुरू हो जाता है। कुछ लोग अपने को बड़ा और दूसरों को छोटा मानने लगते हैं। यह धारणा अच्छी नहीं है। किसी मनुष्य में जन्मजात कोई गुण नहीं होता। मनुष्य को पढ़ाई-लिखाई, सद्संगति और ज्ञानार्जन से अच्छे गुण और अच्छे संस्कार मिलते हैं। जीवन में ये गुण ही मनुष्य के काम आते हैं। अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से कोई लाभ नहीं होता। मनुष्य की पहचान गुणों के आधार पर ही होती है। गुणों के बल पर ही वह जीवन में कुछ करने और कुछ बनने में कामयाब हो पाता है। इसलिए मनुष्य को जहाँ से भी हो और जैसे भी हो, सद्गुण और अच्छे संस्कार अर्जित कर अपनी पहचान बनानी चाहिए।

प्र. 1. (आ)

(1) (i) सारे नगर में समाचार फैलने लगा कि गाँव के बाहर एक पहुँचे हुए महात्मा ने आकर डेरा लगाया है।

(ii) साधु के बारे में लोग कहते थे कि महात्मा जी के उपदेशों में जादू है और उनके आशीर्वाद से संसार के बड़े-से-बड़े कष्ट दूर हो जाते हैं।

(2) **(i)** (1) धीरे-धीरे।

(2) कभी-कभी।

(ii) (1) असफलता × सफलता।

(2) अपकीर्ति × कीर्ति।

(3) बहुरूपियों की विभिन्न रूप धारण कर लोगों को चकित कर देने वाली कला हमारे यहाँ प्राचीन काल से प्रचलित रही है। राजा-महाराजाओं के दरबार में बहुरूपिये तरह-तरह के रूप धारण कर उनका मनोरंजन करते और इनाम पाया करते थे। बाजार-हाट, मेलों तथा रईसों के शादी-ब्याह के समारोहों में भी बहुरूपिये अपनी कला से लोगों का मनोरंजन करते। लोक कलाओं के समारोहों में बहुरूपिये

किसी-न-किसी पात्र के भेस में अवश्य दिखाई देते थे। ये साधु, फकीर, जोगी, लँगडे, अंधे का रूप धारण कर ऐसा अभिनय करते थे, लगता था जैसे वे वही हों। बहुरूपियों का अपना समाज हुआ करता था। उनका यह पेशा उनकी आय का साधन होता था। पर वे अपनी कला के प्रति निष्ठावान हुआ करते थे और उसका नाजायज फायदा नहीं उठाते थे। मनोरंजन के आधुनिक साधनों के सामने आजकल बहुरूपियों की कला का मोल नहीं रह गया है। इसलिए आजकल बहुरूपियों के दर्शन नहीं होते।

प्र. 2. (अ)

(1) **बादल के बरसने पर –**

- आँखें खोलीं – धरती ने
- चारों ओर फैली – हरियाली
- मुस्काएँ – बाग-बगीचे, ताल-तलैया
- गीत सुनाएँ – तरु

(2) मोर कहता है कि अब वह अकेला नहीं होगा, उसकी पूरी टोली अब यहाँ जुटेगी। वर्षा ऋतु में सोंधी-सोंधी-सी सुगंध मिट्टी से बात करती है।

वर्षा ऋतु में चारों ओर आनंद का प्रसार हो गया है। वर्षा की फुहारों से बाग-बगीचों में वृक्ष प्रफुल्लित हो गए हैं। तालाब और छोटी-छोटी तलैयाँ पानी से लबालब भरकर प्रसन्न दिखाई दे रही हैं। बगीचे के वृक्ष हवा के झकोरों से मस्ती में भरे हुए गुनगुनाते और गाते हुए से लगते हैं।

प्र. 2. (आ)

(1) **पद्यांश में उल्लेखित –**

गाँव	प्राणी	नदी	वृक्ष
गोकुल	धेनु	कालिंदी	कदंब

(2) 'मानुष हौं तो .... मँझारन।।'

रसखान कहते हैं कि यदि मैं अगले जन्म में मनुष्य बनूँ तो मुझे गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच रहने का अवसर मिले। यदि मैं पशु बनूँ, तो उस पर मेरा कोई बस नहीं है। मैं चाहता हूँ कि मैं सदैव नंद बाबा की गायों के मध्य चरूँ।

प्र. 3.

(1) (i) मस्तक (ii) खूबसूरत।

(2) (i) धीरे-धीरे बोलो, कोई सुन लेगा।

(ii) प्रियम बीमार था, इसलिए वह पाठशाला नहीं आ सका।

(3)

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि भेद
सज्जन	सत् + जन	व्यंजन संधि

अथवा

दुर्लभ	दुः + लभ	विसर्ग संधि

(4) • बहुत सालों बाद मिले अपने बेटे को माँ ने अंक में भर लिया।

अथवा

• **मुहावरा** – चौपट हो जाना।

अर्थ : नष्ट हो जाना।

वाक्य : कोरोना की महामारी से लाखों लोगों का धंधा-व्यापार चौपट हो गया।

(5) (i) कहाँ तक चल रहे हैं? – अपूर्ण वर्तमानकाल।

(ii) (1) मुझे अभिवादन का ध्यान आएगा।

(2) मैंने सबकी बात सुनी थी।

(6) (i) संयुक्त वाक्य।

(ii) (1) दिव्या मैं ठीक हूँ।

(2) क्या अधिक वर्षा के लिए हम जिम्मेदार हैं?

प्र. 4. (अ) तथा (आ)

उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।

★ ★ ★